दीदी से दुनिया

विमल देवी उम्र 32 वर्ष हाजीपुर के वार्ड नं0 10 के अपने परिवार के साथ रहती है। आर्थिक रूप से काफी कमजोर होने के कारण विमल चाहती थी, कि वह कुछ काम करके गृहस्थी चलाने मे परिवार को आर्थिक सहयोग कर सकें। इसके लिए उसने कई प्रयास भी किए किन्तु वह सफल नहीं हो सकी। एक तो विमल आठवीं पास थी तथा उसके उपर बीमार सास की देख–रेख की जिम्मेदारी भी थी। वह घर से बाहर कहीं जा भी नही सकती थी। उसके तीन बच्चे एवं बीमार सास की देख–रेख एवं ईलाज में अधिक खर्च होने के कारण गृहस्थी चलाना बहुत मुश्किल हो रहा था। पति की कमाई कम थी, जिससे सारे खर्चे की भरपाई नही हो पाती थी। विमल बताती है कि वर्ष 2015 में जब राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन की सी0आर0पी0 दीदी के द्वारा स्वयं सहायता समुह के बारे में बताया गया एवं जानकारी दी गई की समुह से जुड़ कर छोटी छोटी बचत से कैसे अपने आर्थिक स्थिति को बेहतर किया जा सकता है। विमल जानकारी प्राप्त करने के बाद अपनी आस– पड़ोस की महिलाओं के साथ इस पर विचार करते हुए समूह बनाने का निर्णय लिया। इस प्रकार 10 महिलाओ का एक समूह तैयार हुआ समूह का नाम **आशा स्वयं सहायता समूह** रखा गया समूह की नियमित बैठक एवं बचत होने लगी। सी0आर0पी0 दीदी से नयी–नयी सरकारी योजनाओं की जानकारी भी होने लगी। विमल बताती हैं कि समूह से जुड़ने के बाद उसमें आत्म–विश्वास बढ़ा। वह कम पढ़े लिखे होने से कोई काम नही कर सकने की बात दिल में ले बैठी थी। विमल इच्छा

शक्ति के बल पर समूह के महिलाओ के साथ वह रंगीन रेशमी धागाओं से कई तरह की चीजे बनाने लगी, जैसे छोटे बच्चो के गर्दन एवं हाथ–पैर में पहन्ने की धागा महिलाओं के गले में मोतियों के हार में उपयोग होने वाले धागें, अन्नत, पुजा में उपयोग होने वाले पवित्र धागे आदि।

शुरू में तैयार माल की बिक्री हेतु पर्याप्त ग्राहक नही मिल रहे थे। फिर उसने सी0आर0पी0 दीदी को वार्ड नं0 10 में समूह बनाने हेतु मदद किया। विमल के सहयोग से वार्ड नं 10 में शीघ्र ही 10 समूह बन गया जिससे वहाँ क्षेत्र स्तरीय संध का गठन किया गया। इस प्रकार विमल का दायरा बढ़ा एवं उन महिलाओं के द्वारा उसे अपनी उत्पादों की बिक्री मे मदद मिलने लगी। इस प्रकार विमल एवं समूह के महिलाओं का उत्साह बढ़ता गया। समूह के द्वारा अब तरह–तरह के डिजाईदार मंगलसुत्र बनाने का काम किया जाने लगा है। अब विमल के उत्पाद का न सिर्फ हाजीपुर बल्कि महुआ लालगंज एवं जन्दाहा के बजारों से भी मांग होने लगी है अब विमल प्रति दिन चार सौ से पाँच सौ रू0/ मुनाफा कमा लेती है। विमल अब बैंक से समूह ऋण लेकर सभी महिलाओं के साथ अपने व्यवसाय को बढाना चहती है ताकि समूह के सभी महिलाओं कों अधिक लाभ मिल सके।